वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी

- दादा भगवान

Table of Contents

दादा भगवान कथित

वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी

मूल गुजराती संकलन : डॉ. नीरूबहन अमीन

अनुवाद : महात्मागण

– त्रिमंत्र –

नमो अरिहंताणं

नमो सिद्धाणं

नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाणं

नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच नमुक्कारो,

सव्व पावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसिं,

पढमं हवइ मंगलम्॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

ॐ नम: शिवाय ॥ ३ ॥

जय सच्चिदानंद

‘दादा भगवान’ कौन ?

जून १९५८ की एक संध्या का करीब छ: बजे का समय, भीड़ से भरा सूरत शहर का रेल्वे स्टेशन, प्लेटफार्म नं. x की बेंच पर बैठे श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल रूपी देहमंदिर में कुदरती रूप से, अक्रम रूप में, कई जन्मों से व्यक्त होने के लिए आतुर ‘दादा भगवान’ पूर्ण रूप से प्रकट हुए। और कुदरत ने सर्जित किया अध्यात्म का अद्भुत आश्चर्य। एक घंटे में उन्हें विश्वदर्शन हुआ। ‘मैं कौन? भगवान कौन? जगत् कौन चलाता है? कर्म क्या? मुक्ति क्या?’ इत्यादि जगत् के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों के संपूर्ण रहस्य प्रकट हुए। इस तरह कुदरत ने विश्व के सम्मुख एक अद्वितीय पूर्ण दर्शन प्रस्तुत किया और उसके माध्यम बने श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल, गुजरात के चरोतर क्षेत्र के भादरण गाँव के पाटीदार, कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करनेवाले, फिर भी पूर्णतया वीतराग पुरुष!

‘व्यापार में धर्म होना चाहिए, धर्म में व्यापार नहीं’, इस सिद्धांत से उन्होंने पूरा जीवन बिताया। जीवन में कभी भी उन्होंने किसीके पास से पैसा नहीं लिया, बल्कि अपनी कमाई से भक्तों को यात्रा करवाते थे।

उन्हें प्राप्ति हुई, उसी प्रकार केवल दो ही घंटों में अन्य मुमुक्षु जनों को भी वे आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे, उनके अद्भुत सिद्ध हुए ज्ञानप्रयोग से। उसे अक्रम मार्ग

कहा। अक्रम, अर्थात् बिना क्रम के, और क्रम अर्थात् सीढ़ी दर सीढ़ी, क्रमानुसार ऊपर चढऩा। अक्रम अर्थात् लिफ्ट मार्ग, शॉर्ट कट।

वे स्वयं प्रत्येक को 'दादा भगवान कौन?' का रहस्य बताते हुए कहते थे कि ''यह जो आपको दिखते हूँ वे दादा भगवान नहीं है, वे तो 'ए.एम.पटेल' है। हम ज्ञानी पुरुष हूँ और भीतर प्रकट हुए हूँ, वे 'दादा भगवान' हूँ। दादा भगवान तो चौदह लोक के नाथ हूँ। वे आप में भी हूँ, सभी में हूँ। आपमें अव्यक्त रूप में रहे हुए हूँ और 'यहाँ' हमारे भीतर संपूर्ण रूप से व्यक्त हुए हूँ। दादा भगवान को मैं भी नमस्कार करता हूँ।''

निवेदन

आत्मविज्ञानी श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल, जिन्हें लोग 'दादा भगवान' के नाम से भी जानते हूँ, उनके श्रीमुख से आत्मतत्त्व के बारे में जो वाणी निकली, उसको रिकार्ड करके संकलन तथा संपादन करके ग्रंथो में प्रकाशित की गई है। इस पुस्तक में वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी तथा उनके भरतक्षेत्र के साथ ऋणानुबंध के बारे में संक्षिप्त में संकलन हुआ है। सुज्ञ वाचक के अध्ययन करते ही श्री सीमंधर स्वामी के साथ संधान की भूमिका निश्चित बन जाती है।

'अंबालालभाई' को सब 'दादाजी' कहते थे। 'दादाजी' याने पितामह और 'दादा भगवान' तो वे भीतरवाले परमात्मा को कहते थे। शरीर भगवान नहीं हो सकता है, वह तो विनाशी है। भगवान तो अविनाशी है और उसे वे 'दादा भगवान' कहते थे, जो जीवमात्र के भीतर है।

प्रस्तुत अनुवाद में यह विशेष ख्याल रखा गया है कि वाचक को दादाजी की ही वाणी सुनी जा रही है, ऐसा अनुभव हो। उनकी हिन्दी के बारे में उनके ही शब्द में कहें तो ''हमारी हिन्दी यानी गुजराती, हिन्दी और अंग्रेजी का मिक्सचर है, लेकिन जब 'टी' (चाय) बनेगी, तब अच्छी बनेगी।''

ज्ञानी की वाणी को हिन्दी भाषा में यथार्थ रूप से अनुवादित करने का प्रयत्न किया गया है किन्तु दादाश्री के आत्मज्ञान का सही आशय, ज्यों का त्यों तो, आपको गुजराती

भाषा में ही अवगत होगा। जिन्हें ज्ञान की गहराई में जाना हो, ज्ञान का सही मर्म समझना हो, वह इस हेतु गुजराती भाषा सीखें, ऐसी हमारा अनुरोध है।

प्रस्तुत पुस्तक में कईं जगहों पर कोष्ठक में दर्शाये गए शब्द या वाक्य परम पूज्य दादाश्री द्वारा बोले गए वाक्यों को अधिक स्पष्टतापूर्वक समझाने के लिए लिखे गए हूँ। जबकि कुछ जगहों पर अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी अर्थ के रूप में रखे गए हूँ।

अनुवाद संबंधी कमियों के लिए आप के क्षमाप्रार्थी हूँ।

आत्मज्ञान प्राप्ति की प्रत्यक्ष लिंक

''मैं तो कुछ लोगों को अपने हाथों सिद्धि प्रदान करनेवाला हूँ। बाद में अनुगामी चाहिए या नहीं चाहिए? बाद में लोगों को मार्ग तो चाहिए न?''

– दादाश्री

परम पूज्य दादाश्री गाँव–गाँव, देश–विदेश परिभ्रमण करके मुमुक्षुजनों को सत्संग और आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे। आपश्री ने अपने जीवनकाल में ही पूज्य डॉ. नीरूबहन अमीन (नीरू माँ) को आत्मज्ञान प्राप्त करवाने की ज्ञानसिद्धि प्रदान की थी। दादाश्री के देहविलय पश्चात् नीरू माँ उसी प्रकार मुमुक्षुजनों को सत्संग और आत्मज्ञान की प्राप्ति, निमित्त भाव से करवा रही थीं। पूज्य दीपकभाई देसाई को दादाश्री ने सत्संग करने की सिद्धि प्रदान की थी। नीरू माँ की उपस्थिति में ही उनके आशीर्वाद से पूज्य दीपकभाई देश–विदेशो में कई जगहों पर जाकर मुमुक्षुओं को आत्मज्ञान करवा रहे थे, जो नीरू माँ के देहविलय पश्चात् आज भी जारी है। इस आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद हज़ारों मुमुक्षु संसार में रहते हुए, ज़िम्मेदारियाँ निभाते हुए भी मुक्त रहकर आत्मरमणता का अनुभव करते हूँ।

ग्रंथ में मुद्रित वाणी मोक्षार्थी को मार्गदर्शन में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी, लेकिन मोक्षप्राप्ति हेतु आत्मज्ञान प्राप्त करना ज़रूरी है। अक्रम मार्ग के द्वारा आत्मज्ञान की प्राप्ति का मार्ग आज भी खुला है। जैसे प्रज्वलित दीपक ही दूसरा दीपक प्रज्वलित कर सकता

है, उसी प्रकार प्रत्यक्ष आत्मज्ञानी से आत्मज्ञान प्राप्त कर के ही स्वयं का आत्मा जागृत हो सकता है।

संपादकीय

मोक्ष प्राप्ति की इच्छा किसे नहीं होती? लेकिन प्राप्ति का मार्ग मिलना कठिन है और मोक्षमार्ग के दाता के सिवा उस मार्ग पर कौन ले जाएगा?

पहले भी कई ज्ञानीपुरुष और तीर्थंकर हो चुके हूँ और कितने ही लोगों को मोक्ष का ध्येय सिद्ध करवा गए। वर्तमान में तरणतारण ज्ञानीपुरुष 'दादाश्री' द्वारा यह मार्ग खुला है, अक्रम मार्ग के माध्यम से! क्रम से सीढ़ियाँ चढना और अक्रम में लिफ्ट से चढना, इनमें से कौन-सा आसान है? सीढियाँ या लिफ्ट? इस काल में लिफ्ट ही पुसाएगा न, हर किसी को!

'इस काल में इस क्षेत्र से सीधे मोक्ष नहीं है' शास्त्र ऐसा कहते हूँ। लेकिन वाया महाविदेह क्षेत्र में श्री सीमंधर स्वामी के दर्शन से मोक्षप्राप्ति का मार्ग तो खुला ही है न, बहुत समय से! संपूज्य दादाश्री उसी मार्ग से मुमुक्षुओं को मोक्ष पहुँचाते हूँ, और उस प्राप्ति का विश्वास निश्चय ही मुमुक्षुओं को होता है।

इस काल में इस क्षेत्र में वर्तमान तीर्थंकर नहीं हूँ, लेकिन इस काल में महाविदेह क्षेत्र में वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी विराजमान है और भरत क्षेत्र के मोक्षार्थी जीवों को मोक्ष प्राप्त करवाते हूँ। ज्ञानी उस मार्ग से पहुँचकर औरों को वह मार्ग दिखाते हूँ।

प्रत्यक्ष-प्रकट तीर्थंकर की पहचान होना, उनके प्रति भक्ति जागना और दिन-रात उनका संधान करके, अंत में उनके प्रत्यक्ष दर्शन पाकर केवलज्ञान प्राप्त होना, यही मोक्ष का प्रथम से अंतिम मार्ग है, ज्ञानी ऐसा बताते हूँ।

श्री सीमंधर स्वामी की आराधना जितनी अधिक होगी, उतना ही उनके साथ संधान सतत विशेष रूप से रहेगा। इससे उनके साथ का ऋणानुबंध गाढ़ होगा। अंत में परम अवगाढ़ तक पहुँचकर, उनके चरणकमल में ही स्थानप्राप्ति की मोहर लगती है!

श्री सीमंधर स्वामी तक पहुँचने के लिए प्रथम तो इस भरत क्षेत्र के सभी ऋणानुबंधों से मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए और वह अक्रम ज्ञान द्वारा प्राप्त आत्मज्ञान और पाँच आज्ञाओं

के पालन से हो सकता है! और साथ साथ श्री सीमंधर स्वामी की अनन्य भक्ति, दिन-रात आराधना करते करते उनके साथ ऋणानुबंध स्थापित होता है, जो इस देह के छूटते ही, वहाँ जाने का रास्ता बना देता है!

कुदरती नियम ऐसा है कि जैसी आंतरिक परिणतियाँ होती हूँ, उसी अनुसार अगला जन्म निश्चित होता है। अभी भरत क्षेत्र में पाँचवां '*आरा*' (कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा) चल रहा है। सभी मनुष्य कलियुगी हूँ। अक्रम विज्ञान प्राप्त करके ज्ञानी की आज्ञा का आराधन करने लगें, तभी से आंतरिक परिणतियाँ एकदम उच्च स्तर पर पहुँच जाती हूँ। वे कलियुगी में से सतयुगी बन जाती हूँ। भीतर चौथा *आरा* बर्तता रहता है। बाहर पाँचवां और भीतर चौथा आरा! आंतरिक परिणति में परिवर्तन होने से जहाँ चौथा *आरा* चल रहा हो, मृत्यु के बाद जीव वहीं पर खिंच जाता है और उसमें भी श्री सीमंधर स्वामी की भक्ति से उनके साथ ऋणानुबंध पहले से ही बाँध लिया होता है। इसलिए वह जीव उनके समीप, चरणों में खिंच जाता है! ये सब नियम हूँ, कुदरत के!

संपूज्य दादाश्री हमेशा कहते थे कि जब मूल नायक सीमंधर स्वामी के मंदिरों का जगह-जगह निर्माण होगा, भव्य मंदिरों का निर्माण होगा, घर-घर सीमंधर स्वामी की पूजा-आरतियाँ होंगी, तब दुनिया का नक्शा कुछ और ही हो गया होगा!

भगवान श्री सीमंधर स्वामी के बारे में ज़रा सी बात करते ही लोगों के हृदय में उनके प्रति भक्ति शुरू हो जाती है! दिन-रात सीमंधर स्वामी को दादा भगवान की साक्षी में नमस्कार करते रहना। प्रतिदिन सीमंधर स्वामी की आरती और चालीस बार नमस्कार करना।

साधारणतया परम कृपालु श्री दादा भगवान सभी मुमुक्षुओं को निम्नलिखित नमस्कार विधि के द्वारा श्री सीमंधर स्वामी से संधान करवाते थे।

'प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में विचरते तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।'

ये शब्द संधान नहीं है, लेकिन उस समय मुमुक्षुओं को खुद श्री सीमंधर स्वामी को नमस्कार करते हों ऐसी अनुभूति होती है, वह संधान है।

'प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में' ऐसा शब्दप्रयोग इसलिए प्रायोजित किया गया है, कि जब तक मुमुक्षु का श्री सीमंधर स्वामी के साथ सीधा तार नहीं जुड़ा है, तब तक जिनका निरंतर उनके साथ तार जुड़ा हुआ है, ऐसे ज्ञानीपुरुष श्री दादा भगवान के माध्यम द्वारा, हम श्री सीमंधर स्वामी को अपने नमस्कार पहुँचाते हूँ। जिसका फल प्रत्यक्ष किए गए नमस्कार जितना ही मिलता है। उदाहरण के तौर पर हमें कोई संदेश अमरीका पहुँचाना है, लेकिन उसे हम स्वयं नहीं पहुँचा सकते, इसलिए हम वह संदेश डाक विभाग को सुपुर्द करके निश्चिंत हो जाते हूँ। यह ज़िम्मेदारी डाक विभाग की है और वह उसे निभाता भी है। इसी प्रकार पूज्य दादाश्री श्री सीमंधर स्वामी को अपना संदेश पहुँचाने की ज़िम्मेदारी खुद पर लेते हूँ।

दादा भगवान को साक्षी रखकर नमस्कार विधि करना। यह नमस्कार विधि जिन्हें सम्यक् दर्शन प्राप्त हुआ है, वे समकिती महात्मा समझपूर्वक करें तो उसका फल कुछ और ही मिलता है! मंत्र बोलते समय एक-एक अक्षर ध्यान से पढ़ना चाहिए, इससे चित्त संपूर्णत: शुद्ध रहता है। संपूर्ण चित्तशुद्धिपूर्वक नमस्कार अर्थात् स्वयं खुद को श्री सीमंधर स्वामी के मूर्ति स्वरूप को प्रत्यक्ष नमस्कार करते हुए देखना। प्रत्येक नमस्कार के साथ साष्टांग वंदना करते दिखना चाहिए। जब प्रभु का मूर्त स्वरूप दिखे और साथ साथ प्रभु का अमूर्त ऐसा केवलज्ञान स्वरूप, जो मूर्त स्वरूप से भिन्न है, यह भी समझ में आ जाए, तब समझना कि श्री सीमंधर स्वामी के निकट पहुँच गए हूँ। दादाश्री के श्रीमुख से श्री सीमंधर स्वामी के साथ संधान की बात सुनते ही अनेक लोगों को ऐसी अनुभूति होती है।

आशा है, जिन्हें दादाश्री का प्रत्यक्ष योग नहीं मिला हो, उन्हें यह पुस्तिका परोक्ष रूप से संधान की भूमिका स्पष्ट कर देगी। जो व्यक्ति सचमुच मोक्ष का इच्छुक होगा, उसका श्री सीमंधर स्वामी के साथ अवश्य संधान हो जाएगा। ऐसा पहले कभी उत्पन्न नहीं हुआ, वैसा श्री सीमंधर स्वामी के प्रति जबरदस्त आकर्षण उत्पन्न हो, तो समझ लेना कि प्रभु के चरणों में स्थान पाने के नगाड़े बजने लगे हूँ।

सीमंधर स्वामी की प्रार्थना, विधि और सीमंधर स्वामी के चरणों में सदा मस्तक रखकर, निरंतर उनकी अनन्य शरण की भावना में रहना। संपूज्य दादाश्रीने बार–बार कहा है कि 'हम भी सीमंधर स्वामी के पास जानेवाले हूँ और आप भी वहाँ पहुँचने की तैयारी करो। इसके बिना एकावतारी या दो अवतारी होना मुश्किल है!' यदि अगला जन्म फिर से इसी भरतभूमि में होगा तो यहाँ भीषण पाँचवा *आरा* चल रहा होगा। वहाँ मोक्ष की बात तो एक ओर रही लेकिन फिर से मनुष्यभव मिलना भी दुर्लभ है! ऐसे संजोगों में अभी से सावधान होकर, ज्ञानियों के बताए गए मार्ग पर चलकर, एकावतारी पद की ही प्राप्ति कर लेते हूँ! बार–बार ऐसा मौका मिलनेवाला नहीं। बहते हुए पानी के प्रवाह को फिर से नहीं पकड़ा जा सकता। बीते हुए समय को भी फिर से नहीं लाया जा सकता। जो हाथ आया मौका गवाँ दे, उसे दूसरी बार मौका पाने का अवसर नहीं मिलता। इसलिए आज से ही जुट जाएँ और गाते रहें.....'सीमंधर स्वामी के असीम जय जयकार हो!'

सीमंधर स्वामी कौन हूँ? कहाँ हूँ? कैसे हूँ? उनका पद क्या है? उसके अलावा उनका महत्व कितना है? उनके बारे में जितनी संभव हो सके, उतनी समग्र जानकारी पूज्य दादाश्री के स्वमुख से निकली थीं, उसका यहाँ संक्षिप्त संकलन होकर प्रकाशित हो रहा है। जो मोक्षमार्गियों के लिए आराधना हेतु अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा!

– डॉ. नीरूबहन अमीन

श्री सीमंधर स्वामी का जीवन चरित्र

अपने भारत वर्ष के ईशान कोण में करोड़ों किलोमीटर की दूरी पर जंबूद्वीप के महाविदेह क्षेत्र की शुरूआत होती है। उसमें ३२ विजय (क्षेत्र) हूँ। इन विजयों में आठवीं विजय 'पुष्पकलावती' है। उसकी राजधानी श्री पुंडरिकगिरी है। इस नगरी में गत चौबीसी के सत्रहवें तीर्थंकर श्री कुन्थुनाथ भगवान के शासनकाल और अठारहवें तीर्थंकर श्री अरहनाथजी के जन्म से पहले श्री सीमंधर स्वामी भगवान का जन्म हुआ था। उनके पिता श्री श्रेयांस पुंडरिकगिरी नगरी के राजा थे। भगवान की माता का नाम सात्यकी था।

यथासमय महारानी सात्यकी ने अद्वितीय रूप और लावण्यवाले, सर्वांग–सुंदर स्वर्णकांतिवाले और वृषभ के लांछनवाले पुत्र को जन्म दिया। (वीर संवत् की गणनानुसार

चैत्र कृष्णपक्ष दसवीं की मध्यरात्रि के समय) बाल जिनेश्वर का जन्म मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान सहित ही हुआ था। उनका देह पाँचसौ धनुष्य के बराबर है। राजकुमारी श्री रुक्मिणी को प्रभु की अर्धांगिनी बनने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ।

भरतक्षेत्र में बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत स्वामी और इक्कीसवें तीर्थंकर श्री नेमीनाथजी के प्रागट्य काल के बीच, अयोध्या में राजा दशरथ के शासनकाल के दौरान और रामचंद्रजी के जन्म से पहले श्री सीमंधर स्वामी ने महाभिनिष्क्रमण उदययोग से फाल्गुन शुक्लपक्ष की तृतीया के दिन दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा अंगीकार करते ही उन्हें चौथा मन:पर्यव ज्ञान प्राप्त हुआ। दोष कर्मों की निर्जरा होते ही हज़ार वर्ष के छद्मस्थकाल के बाद शेष चार घाति कर्मों का क्षय करके चैत्र शुक्ल की त्रयोदशी के दिन भगवान केवलज्ञानी और केवलदर्शनी बने। उनके दर्शन मात्र से ही जीव मोक्षगामी बनने लगे।

श्री सीमंधर स्वामी प्रभु के कल्याणयज्ञ के निमित्तों में चौरासी गणधर, दस लाख केवलज्ञानी महाराजा, सौ करोड़ साधु, सौ करोड़ साध्वियाँ, नौ सौ करोड़ श्रावक और नौ सौ करोड़ श्राविका हूँ। उनके शासन रक्षक में यक्षदेव श्री चांद्रायणदेव और यक्षिणीदेवी श्री पांचांगुली देवी हूँ।

अगली चौबीसी के आठवें तीर्थंकर श्री उदयस्वामी के निर्वाण के पश्चात् और नौवें तीर्थंकर श्री पेढाळस्वामी के जन्म से पहले श्री सीमंधर स्वामी और अन्य उन्नीस विहरमान तीर्थंकर भगवंत श्रावण शुक्ल पक्ष तृतीया के अलौकिक दिन को चौरासी लाख पूर्व की आयु पूर्ण कर के निर्वाणपद प्राप्त करेंगे।

वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी!

वर्तमान तीर्थंकर की भक्ति से 'मोक्ष'!

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी कौन हूँ, यह समझाने की कृपा कीजिए!

दादाश्री : सीमंधर स्वामी वर्तमान तीर्थंकर साहिब हूँ। वे इस पृथ्वी से बाहर दूसरे क्षेत्र, महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकर साहिब हूँ! ऋषभदेव भगवान हुए, महावीर भगवान हुए... उनके जैसे सीमंधर स्वामी तीर्थंकर हूँ।

तीन प्रकार के तीर्थंकर होते हूँ। एक भूतकाल के तीर्थंकर, एक वर्तमानकाल के तीर्थंकर और एक भविष्य काल के तीर्थंकर! इनमें भूतकाल के तो हो चुके। उन्हें याद करने से हमें पुण्यफल मिलेगा। उसके अलावा अभी जिसका शासन होता है, उनकी आज्ञा में रहने से धर्म उत्पन्न होता है। वह मोक्ष की ओर ले जानेवाला होता है!

लेकिन यदि कभी वर्तमान तीर्थंकर को याद करें, तो उसकी बात ही अलग होती हूँ! वर्तमान की ही कीमत है सारी, नकद रुपये हों, उसीकी कीमत होती है। जो बाद में आएँगे वे रुपये भावी! और गए वे तो गए! अत: नकद बात चाहिए हमें! इसलिए नकद की पहचान करवा देता हूँ न! और ये सारी बातें नकद हूँ। दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सोल्यूशन! नकद चाहिए, उधार नहीं चलेगा। और चौबीस तीर्थंकरों को भी हम नमस्कार करते हूँ न!

संयति पुरुष, चौबीस तीर्थंकरों को क्या कहते थे? अतीत (भूतपूर्व) तीर्थंकर, अर्थात् जो भूतकाल में हो गए हूँ, वे। हमें वर्तमान तीर्थंकरों को खोज निकालना चाहिए।

भूतकाल के तीर्थंकरों की भक्ति से संसार में अपनी प्रगति होगी, लेकिन मोक्षफल प्राप्त नहीं होगा। मोक्षफल तो आज जो हाज़िर हूँ, वे ही दे सकते हूँ।

'नमो अरिहंताणं' आज कौन?

लोग जो नवकार मंत्र बोलते हूँ, वे किस समझ से बोलते हूँ? मैंने उन लोगों से पूछा, तब मुझे बताया, 'चौबीस तीर्थंकर, वे ही अरिहंत हूँ!' तब मैंने कहा, 'तुम अगर उन्हें अरिहंत कहोगे तब फिर सिद्ध किसे कहोगे? वे अरिहंत थे, अब तो सिद्ध हो चुके हूँ। तो अब अरिहंत कौन हूँ? ये लोग अरिहंत मानते हूँ, वे किसे 'नमो अरिहंताणं' मानते हूँ? 'नमो अरिहंताणं' बोलते हूँ न?

ये चौबीस तीर्थंकर हूँ न, वे अरिहंत कहलाते हूँ, लेकिन जब तक वे जीवंत थे, तभी तक अरिहंत। अब वे तो निर्वाण होकर मोक्ष में गए, इसलिए सिद्ध कहलाते हूँ। अर्थात् सिद्धाणं पद में आए। तो अरिहंताणं कोई है नहीं। जो चौबीस तीर्थंकरो को ही अरिहंत मानते हूँ, उन्हें मालूम नहीं है कि वे तो सिद्ध हो चुके हूँ। यानी इस तरह गलत चल रहा है। इसलिए नवकार मंत्र फल नहीं देता। फिर मैंने उन्हें समझाया कि अरिहंत अभी सीमंधर स्वामी हूँ। जो हाज़िर हूँ, जीवंत हूँ, वे अरिहंत हूँ।

जो तीर्थंकर हो गए, वे कहते गए हूँ कि 'अब भरत क्षेत्र में चौबीसी बंद हो रही है, अब तीर्थंकर नहीं होंगे। लेकिन महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकर हूँ, उनकी भक्ति करना! वहाँ पर वर्तमान तीर्थंकर हूँ।' लेकिन यह तो लोगों के लक्ष्य में ही नहीं रहा और उन चौबीस को ही तीर्थंकर कहते हूँ, सभी लोग!! बाकी भगवान तो सबकुछ बताकर गए हूँ।

महावीर भगवान ने सबकुछ स्पष्ट किया था! महावीर भगवान जानते थे कि अब बाद में अरिहंत नहीं रहेंगे। किसे भजेंगे ये लोग? इसलिए उन्होंने स्पष्ट किया था कि महाविदेह क्षेत्र में बीस तीर्थंकर हूँ और उनमें श्री सीमंधर स्वामी भी हूँ। यह बताया, इसलिए बाद में मान्य हुआ। मार्गदर्शन महावीर भगवान का, बाद में कुंदकुंदाचार्य को भी यही ताल मिला था।

अरिहंत यानी वर्तमान में अस्तित्व होना चाहिए। जिनका निर्वाण हो चुका है, वे तो सिद्ध कहलाते हूँ। निर्वाण के पश्चात्, उन्हें अरिहंत नहीं कह सकते।

नवकार मंत्र कब फलेगा?

इसलिए कहना पड़ा कि 'अरिहंत को नमस्कार करो।' तब पूछते हूँ, कि 'अरिहंत कहाँ पर हूँ अभी?' तब मैंने कहा, 'सीमंधर स्वामी को नमस्कार करो। सीमंधर स्वामी ब्रह्मांड में हूँ। वे आज अरिहंत हूँ। इसलिए उन्हें नमस्कार करो! वे मौजूद हूँ। अरिहंत के रूप में होने चाहिए, तभी हमें फल मिलता है।' अत: पूरे ब्रह्मांड में जहाँ कहीं भी अरिहंत हों, उन्हें नमस्कार करता हूँ। ऐसा समझकर बोलें तो उसका फल बहुत सुंदर मिलता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वर्तमान में विहरमान बीस तीर्थंकर तो हूँ न?

दादाश्री : हाँ, उन वर्तमान बीस को अरिहंत मानोगे तो तुम्हारा नवकार मंत्र फलेगा, नहीं तो नहीं फलेगा। यानी सीमंधर स्वामी की भजना ज़रूरी है, तब मंत्र फलेगा। कईं लोग इन बीस तीर्थंकरों के बारे में नहीं जानने की वजह से, या तो 'उनका और हमारा क्या लेना-देना?' ऐसा सोचकर इन चौबीस तीर्थंकरों को ही 'ये अरिहंत हूँ' ऐसा मानते हूँ। आज वर्तमान में होने चाहिए, तभी फल प्राप्त होगा! ऐसी तो कितनी सारी गलतियाँ होने से यह नुकसान हो रहा है।

नवकार मंत्र बोलते समय साथ-साथ सीमंधर स्वामी ख्याल में रहने चाहिए, तब आपका नवकार मंत्र शुद्ध रूप से हुआ कहा जाएगा।

लोग मुझे कहते हूँ कि आप सीमंधर स्वामी का क्यों बुलवाते हूँ? चौबीस तीर्थंकरों का क्यों नहीं बुलवाते? मैंने कहा, 'चौबीस तीर्थंकरों का तो बोलते ही हूँ। लेकिन हम रीति के अनुसार बोलते हूँ। और सीमंधर स्वामी का अधिक बोलते हूँ, क्योंकि वे वर्तमान तीर्थंकर हूँ और 'नमो अरिहंताणं' उन्हीं को पहुँचता है।

यह तो प्रकट, प्रत्यक्ष, साक्षात् भगवान!

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी प्रकट कहलाते हूँ?

दादाश्री : हाँ, वे प्रकट कहलाते हूँ। प्रत्यक्ष, साक्षात् हूँ। देहधारी हूँ और अभी महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकर रूप में विचर रहे हूँ।

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी महाविदेह में हूँ तो वे हमारे लिए प्रकट किस तरह कहलाएँगे?

दादाश्री : कलकत्ता में सीमंधर स्वामी हों, उन्हें देखा नहीं हो तब भी प्रकट माने जाएँगे, वैसे ही यह है, महाविदेह क्षेत्र का।

प्रत्यक्ष–परोक्ष की स्तुति में फर्क

प्रश्नकर्ता : हम महावीर भगवान की स्तुति करें, प्रार्थना करें और सीमंधर स्वामी की स्तुति करें, प्रार्थना करें तो इन दोनों के फल में क्या फर्क पड़ेगा ?

दादाश्री : भगवान महावीर की स्तुति वे खुद तो सुनते ही नहीं, फिर भी कोई सीमंधर स्वामी का नाम नहीं लेता हो, लेकिन महावीर भगवान का नाम लेता हो तो भी अच्छा है। लेकिन महावीर भगवान का सुनेगा कौन? वे खुद तो सिद्धगति में जा बैठे हूँ!! उन्हें यहाँ से कुछ लेना–देना नहीं है! यह तो हम अपने आप रूपक बना–बनाकर स्थापित करते रहते हूँ। वे अभी तीर्थंकर भी नहीं हूँ। वे तो अब सिद्ध ही हूँ। ये सीमंधर स्वामी हाज़िर हूँ, वे ही फल देंगे।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् जो फल मिलता है वह, 'नमो अरिहंताणं' का ही फल मिलता है, ऐसा हुआ न? 'नमो सिद्धाणं' का कोई फल नहीं?

दादाश्री : अन्य कुछ फल नहीं मिलता। वह तो, यदि हम तय कर लें कि 'भाई, कौन से स्टेशन जाना है?' तब कहे, 'भाई, आणंद जाना है।' तो आणंद अपने लक्ष्य में रहता है। उसी तरह यह मोक्ष में जाना है, सिद्धगति में जाना है, वह लक्ष्य में रहता है। बाकी सर्वश्रेष्ठ उपकारी तो अरिहंत ही कहलाते हूँ। अरिहंत किसे कहेंगे? जो हाज़िर हों, उन्हें। गैरहाज़िर हों, उन्हें अरिहंत नहीं कहते। प्रत्यक्ष–प्रकट होने चाहिए। इसलिए

सीमंधर स्वामी पर अपना संपूर्ण लक्ष्य ले जाओ अब। वैसे तो बीस तीर्थंकर हूँ, लेकिन दूसरे कितने नाम हमें याद रहेंगे? इसके बजाय ये जो महत्व है, अपने हिन्दुस्तान के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण माने गए है, वे सीमंधर स्वामी हूँ, उन पर अपना लक्ष्य ले जाओ और उनके लिए जीवन अर्पित करो अब।

दृष्टि, भगवान के दर्शन की

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में सीमंधर स्वामी की प्रवृत्ति क्या है?

दादाश्री : उन्हें क्या प्रवृत्ति? बस, भगवान! लोग दर्शन करते हूँ और वे वीतराग भाव से वाणी बोलते हूँ।

प्रश्नकर्ता : देशना?

दादाश्री : हाँ, बस, देशना देते हूँ।

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी महाविदेह क्षेत्र में और क्या करते हूँ?

दादाश्री : उन्हें कुछ भी नहीं करना होता। कर्म के उदय के अनुसार, बस। खुद के उदयकर्म जो करवाए, वैसा करते हूँ। उनका खुद

का इगोइज़म(अहंकार) खत्म हो चुका है और पूरा दिन ज्ञान में ही रहते हूँ। महावीर भगवान रहते थे, वैसे। उनके फॉलोअर्स (अनुयायी) बहुत सारे हूँ न।

दर्शन मात्र से ही मोक्ष

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी के दर्शन का वर्णन कीजिए।

दादाश्री : सीमंधर स्वामी की आयु इस समय डेढ़ लाख वर्ष की है। वे ऋषभदेव भगवान जैसे हूँ। ऋषभदेव भगवान पूरे ब्रह्मांड के भगवान कहलाते हूँ। वैसे ये भी पूरे ब्रह्मांड के भगवान कहलाते हूँ। वे अपने यहाँ नहीं, लेकिन दूसरी भूमि पर हूँ। वहाँ मनुष्य नहीं जा सकता। ज्ञानी खुद की शक्तिवहाँ भेजते हूँ। पूछकर फिर वापस आती है। वहाँ स्थूल शरीर से नहीं जा सकते लेकिन वहाँ जन्म होगा, तभी जा सकते हूँ।

अपने यहाँ भरतक्षेत्र में तीर्थंकरों का जन्म होता था, लेकिन ढाई हज़ार साल से बंद है! तीर्थंकर यानी आखिरी, 'फुल मून' (पूर्ण चंद्र)! लेकिन वहाँ महाविदेह क्षेत्र में सदैव तीर्थंकर जन्म लेते हूँ। सीमंधर स्वामी आज वहाँ विद्यमान हूँ।

प्रश्नकर्ता : वे अंतर्यामी हूँ?

दादाश्री : वे हमें देखते हूँ। हम उन्हें नहीं देख सकते। वे पूरी दुनिया देख सकते हूँ।

सीमंधर स्वामी दूसरे क्षेत्र में हूँ। यह सारी बात बुद्धि से परे है, लेकिन मेरे ज्ञान में आई है। यह लोगों की समझ में नहीं आती। लेकिन हमें एक्ज़ेक्ट (जैसा है वैसा) समझ में आती है। उनके दर्शन करने से लोगों का बहुत कल्याण हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : उनकी देह कैसी है? मनुष्य जैसी? अपने जैसी?

दादाश्री : देह अपने जैसी ही, मनुष्य जैसी ही देह है।

प्रश्नकर्ता : उनकी देह का परिमाण क्या है?

दादाश्री : परिमाण बहुत विशाल है। हाइट बहुत ऊँची है। उनकी आयु लंबी है और सभी बातें ही अलग हूँ।

महाविदेह क्षेत्र कहाँ? कैसा?

प्रश्नकर्ता : जहाँ सीमंधर स्वामी विचर रहे हूँ, वह महाविदेह क्षेत्र कहाँ है?

दादाश्री : वह तो अपने इस भरत क्षेत्र से बिल्कुल अलग है, इशान दिशा में है। सभी क्षेत्र अलग अलग हूँ। वहाँ ऐसे आसानी से नहीं जा सकते।

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र, वह अपने भरत क्षेत्र से अलग माना जाता है ?

दादाश्री : हाँ, अलग। सिर्फ महाविदेह क्षेत्र ही ऐसा है, जहाँ सदैव तीर्थंकर जन्म लेते हूँ और अपने क्षेत्र में निश्चित समय में ही तीर्थंकर जन्म लेते हूँ, बाद में नहीं होते। अपने यहाँ कुछ समय के लिए तीर्थंकर नहीं होते। लेकिन अभी जो ये सीमंधर स्वामी हूँ, वे अपने लिए हूँ। वे अभी लंबे समय तक रहनेवाले हूँ।

भूगोल, महाविदेह क्षेत्र का

प्रश्नकर्ता : अब महाविदेह क्षेत्र के बारे में थोड़ा विस्तार से बताइए। इतने योजन दूर मेरूपर्वत, ये जो बातें शास्त्र में लिखी हूँ, वे सही हूँ?

दादाश्री : सही हूँ। उनमें फर्क नहीं। तथ्यपूर्ण बातें हूँ। हाँ, कितने साल का आयुष्य और अभी कितने साल रहेंगे, वह सब सुनियोजित है। पूरा ब्रह्मांड है, उसमें मध्यलोक है और इसमें पंद्रह प्रकार के क्षेत्र हूँ। मध्यलोक गोलाकार है। लेकिन लोगों को यह दूसरी कुछ बातें समझ में नहीं आएँगी। क्योंकि एक वातावरण में से दूसरे वातावरण में नहीं जाया जा सकता, ऐसे क्षेत्र हूँ भीतर। मनुष्य के जन्म होने लायक और मनुष्य के रहने लायक पंद्रह क्षेत्र हूँ। इनमें से एक यह अपनी भूमि है। इसके उपरांत अन्य चौदह हूँ। उनमें भी अपने जैसे ही मनुष्य हूँ। अपने यहाँ कलियुगी हूँ और वहाँ सतयुगी हूँ। कहीं कहीं कलियुग है और किसी जगह सतयुग भी। इस तरह से मनुष्य हूँ और वहाँ पर, महाविदेह

क्षेत्र में तो अभी सीमंधर स्वामी स्वयं विद्यमान हूँ। अभी उनकी डेढ़ लाख वर्ष की उम्र है और अभी सवा लाख साल तक रहनेवाले हूँ। भगवान रामचंद्रजी के समय में उन्हें देखा था। उससे पहले ही वे जन्मे थे। रामचंद्रजी ज्ञानी थे। उनका जन्म यहाँ पर हुआ था लेकिन वे सीमंधर स्वामी को देख सके थे। सीमंधर स्वामी तो उनके पहले से, बहुत पहले से हूँ। ये जो सीमंधर स्वामी हूँ, उन्हें जगत् कल्याण करना है।

श्री सीमंधर स्वामी, भरत क्षेत्र के कल्याण के निमित्त

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में अभी तीर्थंकर विराजमान हूँ। वैसे ही अन्य किसी क्षेत्र में कोई तीर्थंकर बिराजमान हूँ?

दादाश्री : इस पाँच भरत क्षेत्र में और पाँच ऐरावत क्षेत्र में, वर्तमान में तीर्थंकर विराजमान नहीं हूँ। अन्य पाँच महाविदेह क्षेत्र हूँ, वहाँ इस समय चौथा आरा है, वहाँ पर तीर्थंकर विचर रहे हूँ। वहाँ सदैव चौथा आरा रहता है और अपने यहाँ तो पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवां, छठा–इस तरह *आरे* बदलते रहते हूँ।

प्रश्नकर्ता : यहाँ पर तीर्थंकर कब होते हूँ?

दादाश्री : यहाँ तीसरे–चौथे *आरे* में तीर्थंकर होते हूँ!

प्रश्नकर्ता : और तीर्थंकर, वे अपने यहाँ, हिन्दुस्तान में ही होते हूँ, अन्य कहीं नहीं होते?

दादाश्री : इसी भूमि पर! यही भूमि, हिन्दुस्तान की ही! इसी भूमि पर तीर्थंकर होते हूँ, दूसरी जगह पैदा ही नहीं होते। चक्रवर्ती भी इसी भूमि पर होते हूँ, अर्धचक्री भी इसी भूमि पर होते हूँ। तिरेसठ शलाका पुरुष सभी यहीं होते हूँ।

प्रश्नकर्ता : इस भूमि की कुछ महत्वता होगी ?

दादाश्री : यह भूमि बहुत उच्च मानी जाती है!

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी का ही पूजन किसलिए? अन्य वर्तमान तीर्थंकरों का पूजन क्यों नहीं?

दादाश्री : सभी तीर्थंकरों का हो सकता है, लेकिन सीमंधर स्वामी का यहाँ हिन्दुस्तान के साथ हिसाब है, भाव है उनका। बीस तीर्थंकरों में से विशेष रूप से सीमंधर स्वामी की भजना करनी चाहिए, क्योंकि अपने भरतक्षेत्र के सब से नज़दीक वे ही हूँ और भरत क्षेत्र के साथ उनका ऋणानुबंध है।

वर्तमान में बीस तीर्थंकर हूँ, उनमें से केवल तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी का ही भरतक्षेत्र के साथ ऋणानुबंध, हिसाब है। तीर्थंकरों का भी हिसाब होता है और सीमंधर स्वामी तो आज साक्षात् प्रकट हूँ।

तो अब आप अरिहंत किसे मानेंगे? इन सीमंधर स्वामी को, और जो अन्य उन्नीस तीर्थंकर हूँ, वे सभी अरिहंत ही हूँ लेकिन उन सभी तीर्थंकरों के साथ संबंध रखने की ज़रूरत नहीं है। एक के साथ रखें तो उसमें बाकी के सभी आ जाएँगे। अत: सीमंधर स्वामी के दर्शन करना। 'हे अरिहंत भगवान! आप ही सच्चे अरिहंत हूँ अभी!' ऐसा बोलकर नमस्कार करना।

वहाँ है, मन-वचन-काया की एकता

महाविदेह क्षेत्र में भी मनुष्य हूँ। वे अपने जैसे हूँ, देहधारी ही हूँ। वहाँ पर मनुष्यों के सभी मनोभाव अपने जैसे ही हूँ।

प्रश्नकर्ता : वहाँ आयुष्य लंबा होता है न दादाजी?

दादाश्री : हाँ, आयुष्य लंबा होता है, बहुत लंबा होता है। बाकी, अपने जैसे मनुष्य हूँ, अपने जैसा व्यवहार है। लेकिन अपने यहाँ चौथे *आरे* में जैसा व्यवहार था, वैसा है। इस पाँचवें *आरे* के लोग अब तो जेब काटना सीख गए और भीतर ही भीतर सगे-संबंधियों में भी उल्टा बोलना सीख गए हूँ। ऐसा व्यवहार वहाँ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : वहाँ पर भी ऐसा ही संसार है सारा?

दादाश्री : हाँ, ऐसा ही सब। वह भी कर्मभूमि हूँ, वहाँ पर भी 'मैं करता हूँ' ऐसा भान होता है। अहंकार, क्रोध–मान–माया–लोभ भी हूँ ही। वहाँ पर इस समय तीर्थंकर हूँ। चौथे *आरे* में तीर्थंकर होते हूँ। बाकी अन्य सभी बातें अपने जैसी ही है।

चौथे और पाँचवे *आरे* में फर्क क्या होता है? तब कहे, चौथे *आरे* में मन–वचन–काया की एकता होती है और पाँचवें *आरे* में यह एकता टूट जाती है। अर्थात् मन में जैसा हो, वैसा वाणी से नहीं बोलते और वाणी में हो ऐसा वर्तन में नहीं लाते, उसका नाम पाँचवां आरा। और चौथे *आरे* में तो जैसा मन में हो वैसा ही वाणी से बोलते हूँ और वैसा ही करते हूँ। वहाँ पर चौथे *आरे* में कोई व्यक्ति कहे कि 'मुझे पूरा गाँव जला देने का विचार आ रहा है' तब हमें समझना चाहिए कि यह रूपक में आनेवाला है। और यहाँ आज कोई कहे कि 'मैं तुम्हारा घर जला दूँगा।' तब हमें समझना है, कि अभी तो विचार में है, तुम मुझे कब मिलोगे?' मुँह से बोला हो फिर भी कुछ बरकत नहीं। 'मैं तुम्हें मार डालूँगा' कहे लेकिन कुछ आधार नहीं है, मन–वचन–काया की एकता नहीं है। तब फिर कहे अनुसार कैसे कार्य होगा? कार्य होगा ही नहीं न!

कैसे जा सकते हूँ, वहाँ?

प्रश्नकर्ता : वहाँ जाना हो तो किस स्थिति में मनुष्य जा सकता है?

दादाश्री : वह वहाँ के जैसा हो जाए। जब चौथे *आरे* के लोगों जैसा हो जाए, इस पाँचवे *आरे* के दुर्गुण चले जाएँ, तब वहाँ जाता है। कोई गाली दे, फिर भी मन में उसके लिए बुरा भाव नहीं आए, तब वहाँ जा पाएगा।

प्रश्नकर्ता : सामान्यत: यहाँ से सीधे मोक्ष में नहीं जाया जा सकता। पहले महाविदेह क्षेत्र में जाना और बाद में मोक्ष में जाना, ऐसा कैसे होता है?

दादाश्री : क्षेत्र का स्वभाव ऐसा है कि मनुष्य जिस *आरे* के लायक हो जाएँ, यहाँ पर जो चौथे *आरे* जैसेहो जाएँ, यहाँ पर यह ज्ञान नहीं मिला हो और अन्य लोग भी ऐसे हों, तो वे वहाँ खिंच जाएँगे और वहाँ जो पाँचवें *आरे* जैसे हो जाएँ, वे यहाँ पाँचवे *आरे* में आ जाते हूँ, ऐसा इस क्षेत्र का स्वभाव है। किसी को लाना–ले जाना नहीं पड़ता। क्षेत्र स्वभाव से ये सभी लोग तीर्थंकर के पास पहुँचेंगे। अत: जो सीमंधर स्वामी को रटते रहते हूँ, उन्हें भजते हूँ और बाद में वहाँ उनके दर्शन करेंगे और उनके पास बैठेंगे और वे लोग मोक्ष में चले जाएँगे।

जिन्हें हम ज्ञान देते हूँ, वे एक–दो अवतारी होंगे। फिर उन्हें वहाँ सीमंधर स्वामी के पास ही जाना है। उनके दर्शन करने हूँ, तीर्थंकर के दर्शन करना मात्र शेष रहा। बस, दर्शन होते ही मोक्ष। अन्य सभी दर्शन हो गए। यह आखिरी दर्शन करें, जो इस दादाजी से आगे के दर्शन हूँ। वे दर्शन हुए कि तुरंत मोक्ष!

प्रश्नकर्ता : जितने लोग सीमंधर स्वामी के दर्शन करते हूँ, वे सभी बाद में मोक्ष में जाएँगे?

दादाश्री : वह दर्शन करने से मोक्ष में जाएँगे, ऐसा कुछ नहीं होता। उनकी कृपा प्राप्त होनी चाहिए। हृदय शुद्ध हो जाए, वहाँ पर हृदय शुद्ध हो जाए, उसके बाद उनकी कृपा उतरती जाएगी। यह तो सुनने के लिए आएँ और कान को बहुत मधुर लगा लेकिन सुनकर फिर वे जहाँ थे, वहीं के वहीं। उसे तो सिर्फ चटनी ही पसंद है, पूरा थाल सामने हो तो भी, सिर्फ चटनी के लिए थाल लेकर बैठा रहे तो मोक्ष नहीं होता।

उनके लिए तो सामने चलकर आए महाविदेह क्षेत्र

जिसे यहाँ शुद्धात्मा का लक्ष्य बैठा हो, वह यहाँ पर भरत क्षेत्र में रह ही नहीं सकता। जिसे आत्मा का लक्ष्य बैठा हो, वह महाविदेह क्षेत्र में पहुँच ही जाता है, ऐसा नियम है! यहाँ इस दुषमकाल में रह ही नहीं सकता। जिसे शुद्धात्मा का लक्ष्य बैठा, वह महाविदेह क्षेत्र में एक जन्म या दो जन्म लेकर तीर्थंकर के दर्शन करके मोक्ष में चला जाता है, ऐसा आसान और सरल मार्ग है यह!

उनका संधान 'दादा भगवान' के द्वारा

सीमंधर स्वामी भगवान को 'फोन' करना हो तो फोन का माध्यम होना चाहिए, तब फोन पहुँचेगा। वह माध्यम है ये 'दादा भगवान'। बोलो, महावीर भगवान यदि आज अभी यहाँ दिल्ली में हों और यहाँ से नाम लें तो उन तक पहुँच जाता है। वैसे ही यह भी पहुँच जाता है! यह फोन ज़रा आधा मिनट देर से पहुँचता है, लेकिन पहुँच जाता है।

वे खुद हाज़िर हूँ, लेकिन अपनी दुनिया में नहीं हूँ, दूसरी दुनिया में हूँ। उनके साथ हमारा तार वगैरह चलता रहता है। इस पूरे जगत् का कल्याण होना ही चाहिए। हम तो निमित्त हूँ। इसलिए 'दादा भगवान' थ्रू दर्शन करवाता हूँ और वह वहाँ तक पहुँच जाता है। इसीलिए हमने एक जन्म कहा है न! यहाँ से बाद में वहीं पर जाना है और उनके निकट बैठना है। बाद में मुक्ति होगी। इसलिए आज से ही पहचान करवा देते हूँ और 'दादा भगवान' थ्रू नमस्कार करवाते हूँ।

सीमंधर स्वामी के साथ हमारी इतनी अच्छी पहचान है कि हमारे कहे अनुसार आप दर्शन करोगे तो उन तक पहुँचेगा।

.....वह 'दादा भगवान' थ्रू पहुँचेगा ही

प्रश्नकर्ता : हम भक्तिकरें तो सीमंधर स्वामी तक कैसे पहुँचेगी? क्योंकि वे तो महाविदेह क्षेत्र में हूँ और हम यहाँ पर हूँ।

दादाश्री : आप कलकत्ता में हों तो पहुँचेगा या नहीं पहुँचेगा?

प्रश्नकर्ता : वह पहुँचेगा, लेकिन यह तो बहुत दूर है न?

दादाश्री : कलकत्ता जैसा ही है वह, आँख से नहीं दिखता। वह सब कलकत्ता ही कहलाता है। वे कलकत्ता में हों या बड़ौदा में हों, वे अभी आँख से नहीं दिखते न!

प्रश्नकर्ता : अर्थात् हम जो भक्तिकरें, भाव करें तो वह सब उन्हें वहाँ....

दादाश्री : तुरंत ही पहुँच जाता है। एक प्रत्यक्ष और एक परोक्ष। परोक्ष तो कितना दूर होता है और प्रत्यक्ष तो रूबरू होता है कि जो आँखों से देख सकते हूँ, इन्द्रियो से!

प्रश्नकर्ता : तो फिर उस परोक्ष का लाभ कितना? परोक्ष और प्रत्यक्ष के लाभ में अंतर कितना?

दादाश्री : परोक्ष तो यदि तीन माइल दूर हों या लाख माइल दूर हों तो भी वही का वही! अर्थात् दूर हों तो उसमें कोई हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वे प्रत्यक्ष तीर्थंकर हूँ न?

दादाश्री : वह तो, मूलत: तो प्रत्यक्ष के बिना कोई काम होगा ही नहीं न!

अभी तो यह आपसे पहचान करवा रहे हूँ। हम यह जो हररोज़ बुलवाते हूँ न, तो वहाँ जाना पड़ेगा। उनके दर्शन करोगे, उस दिन मुक्ति! वह आखिरी दर्शन!

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में?

दादाश्री : हाँ, हम तो खटपटिया (कल्याण के लिए खटपट करनेवाले) हूँ। हमारे पास एकावतारी पद प्राप्त होता हूँ। एकावतारी हो जाता है। हमारे पास पूर्णता नहीं हो पाते। इसलिए सीमंधर स्वामी का नाम बुलवाते हूँ न! हररोज़ दर्शन सीमंधर स्वामी के, वहाँ के पंच परमेष्ठी के, अन्य उन्नीस तीर्थंकरों के, यह सब जो हम बुलवाते हूँ, वह एक ही हेतु से कि अब आराधक पद आपका वहाँ पर है।

अब यहाँ, आराधक पद नहीं रहा, इस क्षेत्र में! इसलिए हम वहाँ पर दादा भगवान की साक्षी से पहचान करवाते हूँ। मैंने एक आदमी से कहा, भाई, तुम ऐसा मानो न कि तुम महाविदेह क्षेत्र में हो, यही महाविदेह क्षेत्र है, ऐसा कल्पना से मानो और सीमंधर स्वामी, वहाँ कलकत्ता में हूँ, तो यहाँ से तुम कितनी बार कलकत्ता दर्शन करने जाओगे? कितनी बार जाओगे?

प्रश्नकर्ता : एक बार या ज़्यादा से ज़्यादा दो बार।

दादाश्री : हाँ, ज़्यादा से ज़्यादा दो बार। तो महाविदेह क्षेत्र में भी यदि इतना लाभ मिलता हो, तो अपने इस क्षेत्र में मेरे पास ऐसी चाबी है कि रोज़ाना मैं लाभ करवा देता हूँ। मेरे पास ऐसी चाबी है कि हर रोज़ लाभ। इसलिए सीमंधर स्वामी तीर्थंकर भी नोट करते हूँ कि ऐसे भक्तकोई हुए नहीं कि जो रोज़-रोज़ दर्शन करते हूँ! रहते हूँ परदेश में और प्रतिदिन दर्शन करने आते हूँ! हमें न तो गाड़ी चाहिए न ही घोड़ा! दादा भगवान के थ्रू कहा कि पहुँच गया।

बिना माध्यम के नहीं पहुँचता

प्रश्नकर्ता : प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, सीमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ, वह सीमंधर स्वामी को पहुँचता है। वे देख सकते हूँ, यह हकीकत है न?

दादाश्री : वे देखने में सामान्य भाव से देखते हूँ। तीर्थंकर, विशेष भाव से नहीं देखते। यह दादा भगवान के माध्यम से कहा है, इसलिए वहाँ पहुँचता है। यानी बिना माध्यम के नहीं पहुँच सकता न!

अलग, मैं और 'दादा भगवान'

पुस्तक में जैसे लिखा है कि ये जो दिखाई देते हूँ, वे 'ए.एम.पटेल' हूँ, मैं ज्ञानीपुरुष हूँ और भीतर 'दादा भगवान' प्रकट हुए हूँ। और वे चौदह लोक के नाथ हूँ। जो कभी सुनने में नहीं आया हो, ऐसे ये यहाँ प्रकट हुए हूँ। इसलिए 'मैं खुद ही भगवान हूँ', ऐसा हम कभी भी नहीं कहते। वह तो पागलपन है, मेडनेस है। जगत् के लोग कहें, लेकिन हम

ऐसा नहीं कहते कि हम ऐसे हूँ। हम तो साफ–साफ कहते हूँ और मैं तो 'भगवान हूँ' ऐसा भी नहीं कहता। 'मैं तो ज्ञानीपुरुष हूँ' और तीनसौ छप्पन डिग्री पर हूँ। यानी चार डिग्री का फर्क है। दादा भगवान की बात अलग है और व्यवहार में मैं खुद को 'ए.एम.पटेल' कहता हूँ।

अब इस भेद के बारे में लोगों को ज़्यादा समझ में नहीं आता, यानी कि दादा भगवान भीतर प्रकट हुए हूँ। जो चाहे सो काम निकाल लो। ऐसा साफ–साफ कहता हूँ। कभी कभार ही ऐसा चौदह लोक का नाथ प्रकट होता है। मैं खुद देखकर कह रहा हूँ, इसलिए काम निकाल लो।

वह दर्शन, तुरंत ही पहुँचे

सभी लोग सवेरे नींद से उठें तो भीड़ हो जाती है न? और शाम को तो निरी भीड़ ही होती है। इसलिए सुबह साढ़े चार से साढ़े छः, वह तो ब्रह्ममुहूर्त कहलाता है। सबसे ऊँचा मुहूर्त। उस समय जिसने ज्ञानीपुरुष का स्मरण किया, तीर्थंकरों का स्मरण किया, शासन देवी–देवताओं का स्मरण किया, तो वह सब पहले स्वीकार हो जाता है, सभी को! क्योंकि बाद में लोग बढ़ जाते हूँ न! एक आया, फिर दूसरा आया। फिर भीड़ होने लगती है न! सात बजे से भीड़ होने लगती है। फिर बारह बजे ज़बरदस्त भीड़ हो जाती है। अत: जो सबसे पहले जाकर

खड़ा रहेगा, उसे भगवान के 'फ्रेश' दर्शन होंगे। 'दादा भगवान की साक्षी में सीमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ' बोलते ही तुरंत नमस्कार सीमंधर स्वामी को पहुँच जाते हूँ। उस समय वहाँ कोई भीड़ नहीं होती। बाद में भीड़ में भगवान भी क्या करें? इसलिए साढ़े चार से साढ़े छः तो अपूर्व काल कहलाता है! युवा लोगों को तो यह मौका छोड़ना ही नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : आपने हमें सवेरे सीमंधर स्वामी को चालीस बार नमस्कार करने कहा है, तो उस समय यहाँ पर सुबह हो और वहाँ के समय में डिफरेन्स होगा न?

दादाश्री : हमें वह नहीं देखना है। सुबह कहने का भावार्थ ऐसा है कि अन्य काम-धंधे पर जाने से पहले। अगर धंधा नहीं हो तो किसी भी समय, दस बजे करो, बारह बजे करो!

वहाँ जाया जा सकता है, लेकिन सदेह नहीं

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी वहाँ पर हूँ। आप तो रोज़ दर्शन करने जाते हूँ तो वह किस तरह? वह हमें समझाइए।

दादाश्री : हम जाते हूँ लेकिन हम रोज़ दर्शन करने नहीं जा सकते। हम ज्ञानीपुरुष यहाँ से (कंधे से) एक लाइटवाला प्रकाश निकलता है और निकलकर जहाँ तीर्थंकर हूँ, वहाँ जाकर प्रश्न का समाधान लेकर फिर वापस आ जाता है। जब कभी समझ में फर्क पड़ जाता है, समझने में कुछ भूल हो, तब पूछकर आता है। बाकी, हम सदेह आ-जा नहीं सकते, महाविदेह क्षेत्र ऐसा नहीं है!

हमारा सीमंधर स्वामी के साथ तार जुड़ा हुआ है। हम सभी प्रश्न वहाँ पूछते हूँ और उन सभी के उत्तर मिल जाते हूँ। आज तक हमें लाखों प्रश्न पूछे गए होंगे और उन सभी के उत्तर हमने दिए होंगे, लेकिन वह सब स्वतंत्र रूप से नहीं, सब के जवाब हमें वहाँ से आए थे। सभी उत्तर नहीं दिए जा सकते न! जवाब देना क्या कोई आसान बात है? एक भी व्यक्ति, पाँच जवाब भी नहीं दे सकता! जवाब दे, उतनी देर में तो वादविवाद शुरू हो

जाए। लेकिन यह तो एक्ज़ेक्ट जवाब आते हूँ। इसलिए सीमंधर स्वामी की भजना करते हूँ न!

इस काल में भावी तीर्थंकर कोई बन ही नहीं सकता

प्रश्नकर्ता : दादा, ये जो सब लोग हूँ, दादाजी के ज्ञान प्राप्त महात्मा हूँ, उनमें से कितने तीर्थंकर बनेंगे? ये जो दादाजी का ज्ञान लिए हुए महात्मा हूँ, जो पचास हज़ार होंगे, जितने भी महात्मा हूँ, थोड़े नज़दीक के होंगे, थोड़े दूर के होंगे, उनमें से कितने तीर्थंकर बनेंगे?

दादाश्री : तीर्थंकर, इसमें तीर्थंकर का मालूम नहीं है। इसमें तीर्थंकर नहीं, सभी केवली होंगे। केवलज्ञानी होकर मोक्ष में जाएँगे सभी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन तीर्थंकर क्यों नहीं बन सकते?

दादाश्री : तीर्थंकर नहीं, वह गोत्र बहुत उच्च गोत्र होता है। वह गोत्र तो कब बंधता है कि जब चौथे *आरे* में या तीसरे *आरे* में तीर्थंकर हाज़िर हों, तब बंधा हो तो चलेगा। अभी गोत्र बाँधोगे तो नहीं चलेगा। यानी अभी नया गोत्र नहीं बंध सकता। पुराना बंधा हुआ हो तो हमें पता चल जाता है। तीर्थंकर बनने में कोई विशेष फायदा नहीं है। हमें तो मोक्ष में जाने से फायदा है। तीर्थंकर को भी मोक्ष में ही जाना है न!

प्रश्नकर्ता : कितने सालों में गोत्र बदलता है, अपना? गोत्र किस प्रकार बदलता है?

दादाश्री : वह तो यदि अच्छा काल हो और तीर्थंकर स्वयं हाज़िर हों, तब तीर्थंकर गोत्र बंधता है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, लेकिन अब कलियुग के बाद सतयुग ही आनेवाला है न? अर्थात् अच्छा काल ही आएगा न?

दादाश्री : नहीं, लेकिन जब तीर्थंकर होगे तभी न! उनके आने से पहले, इनमें से ज़्यादातर मोक्ष में चले जाएँगे!

प्रश्नकर्ता : मुझे बार बार ऐसा होता रहता है कि हम तीर्थंकर क्यों नहीं बन सकते? या फिर सीधे मोक्ष में ही जाएँगे? फिर आपसे यह जानने को मिला कि तीर्थंकर गोत्र बाँधा हो तभी तीर्थंकर हुआ जा सकता है। तो अब हम किस प्रकार गोत्र बाँध सकते हूँ?

दादाश्री : अब भी तुझे फिर से लाख बरस अवतार करने हों तो बंध सकेगा। तो फिर से बंधवा दूँ और फिर सातवें नर्क में बहुत बार जाना पड़ेगा। कितनी ही बार नर्क में जाए, तब जाकर ऐसे अच्छे पद मिलते हूँ।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसे अच्छे पद प्राप्त करने हों तो नर्क में जाने में क्या हर्ज है?

दादाश्री : रहने दे, तेरी होशियारी रहने दे, चुपचाप! समझ जा। ज़रा सा तप करना पड़ेगा, उस घड़ी पता चल जाएगा! और वहाँ तो बहुत सारे तप करने पड़ते है और नर्क की बात तुझे सुनाऊँ न तो सुनते ही मनुष्य मर जाए, उतना दु:ख है वहाँ तो! सुनते ही आज के लोग मर जाए, कि 'अरेरे... ओहोहो, मर गया', प्राण निकल जाएँ। इसलिए ऐसा मत बोलना, वर्ना *नियाणां* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक वस्तु की कामना करना) हो जाएगा।

भूल से भी उन्हें परोक्ष मत मानना

अन्य जगह पर सीमंधर स्वामी की मूर्तियाँ स्थापित हूँ। कितनी सारी जगहों पर स्थापित होंगी, लेकिन यह मेहसाणा के मंदिर जैसी होनी चाहिए, तो इस देश का कल्याण हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : वह कल्याण कैसे होगा?

दादाश्री : सीमंधर स्वामी जो तीर्थंकर हूँ, वर्तमान तीर्थंकर हूँ, उन्हें मूर्ति के रूप में भजे। ऐसा मानो न कि भगवान महावीर होते, भगवान महावीर के समय में हम होते तो और ऐसा होता कि वे विहार करते करते इस तरफ नहीं आ पाते और आप वहाँ उनके पास नहीं जा पाते, तो अगर आप यहाँ 'महावीर, महावीर' करते तो आपको प्रत्यक्ष के समान ही लाभ होता न? लाभ होता या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : वर्तमान तीर्थंकर अर्थात्? वर्तमान तीर्थंकर के परमाणु ब्रह्मांड में घूमते हूँ, वर्तमान तीर्थंकर से बहुत लाभ होता है!

प्रश्नकर्ता : मैं घर बैठकर सीमंधर स्वामी को याद करूँ और मंदिर जाकर याद करूँ, उसमें फर्क है क्या?

दादाश्री : हाँ, फर्क पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : क्योंकि मंदिर में प्रतिष्ठा की हुई है, प्राणप्रतिष्ठा की है, इसलिए?

दादाश्री : प्रतिष्ठा की है और वहाँ पर देवताओं का रक्षण अधिक रहता है न! इसलिए वहाँ ऐसा वातावरण होता है, जिससे वहाँ असर ही ज़्यादा होता है न! जैसे तुम दादाजी का मन में स्मरण करो और यहाँ पर करो, उसमें फर्क तो बहुत पड़ता है न?

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आप तो जीवंत हूँ।

दादाश्री : उतने ही जीवंत वे भी हूँ। जितने जीवंत ये दादाजी हूँ, उतने ही जीवंत वे हूँ। अज्ञानियों के लिए ये दादाजी जीवंत हूँ और ज्ञानी के लिए तो वे भी उतने ही जीवंत हूँ। क्योंकि उसमें जो भाग दृश्यमान है, वह पूरा मूर्ति ही है। मूर्ति के अलावा और कुछ नहीं है। पाँच इन्द्रियगम्य है, उसमें अमूर्त नाम मात्र का भी नहीं है। सब मूर्त ही है और इस मूर्ति में फर्क नहीं है, डिफरेन्स नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यहाँ पर अमूर्त है और वहाँ मूर्ति में अमूर्त नहीं है, ऐसा मानते हूँ न?

दादाश्री : वहाँ अमूर्त नहीं है, लेकिन मूर्ति में उनकी प्राणप्रतिष्ठा की हुई होती है। वह तो जैसा प्रतिष्ठा का बल! इनकी तो बात ही अलग है न! प्रकट भगवान की बात ही अलग है न! प्रकट नहीं होते, तब क्या से क्या हो जाए।

प्रश्नकर्ता : और प्रकट तो होते ही नहीं, बहुत काल तक तो।

दादाश्री : और वे नहीं हों तो भूतकालीन तीर्थंकर, अपने चौबीस तीर्थंकर तो हूँ ही न!

हितकारी वर्तमान तीर्थंकर ही

प्रश्नकर्ता : दादा, ये मंदिर वगैरह सब बन रहे हूँ तो उनमें वास्तव में आत्मा का भाव करना है न? मंदिर वगैरह का क्या काम है? वास्तव में तो हमें आत्मा का ही रास्ता खोजना है न?

दादाश्री : मंदिर अवश्य बनाने चाहिए। जो चले गए हूँ, उनका मंदिर बनाने का क्या अर्थ है? सीमंधर स्वामी हाज़िर हूँ, तो उनके दर्शन करे तो कल्याण हो जाएगा। वे प्रत्यक्ष हूँ, इसलिए कल्याण हो जाएगा। ऐसा कुछ होगा तो इन लोगों का कल्याण होगा, निमित्त चाहिए। यानी सीमंधर स्वामी का संकेत अवश्य फलदायी है। अत: जिन लोगों ने ज्ञान नहीं लिया हो और वहाँ मंदिर में सीमंधर स्वामी के दर्शन करें, तो भी फल है उसमें, इसीलिए ये मंदिर बना रहे हूँ, वर्ना अपने यहाँ कहीं ऐसा होता होगा? हमें शोभा नहीं देता, यह सब। और फिर ये तो जीवंत तीर्थंकर हूँ, इसलिए बात कर रहे हूँ। दूसरे भूतकालीन तीर्थंकरों के बारे में बात करने का अर्थ ही नहीं। अन्य चाहिए उतने मंदिर हूँ ही। उनकी भी ज़रूरत है। हम उसके लिए मना नहीं करते, क्योंकि वह मूर्तिपूजा है और भूतकालीन तीर्थंकरों की है।

यह इच्छा है 'हमारी'

दुनिया में मतभेद कम कर देने हूँ। मतभेद दूर होंगे न, तब इस बात को सही रूप से समझेंगे। ये मतभेद तो इतने सारे कर दिए हूँ

कि यह शिव की एकादशी और यह वैष्णव की एकादशी, एकादशियाँ भी अलग अलग! इसलिए मैंने मंत्र एक साथ कर दिए हूँ और मंदिर अलग अलग रखे हूँ। क्योंकि यह एक प्रकार की बिलीफ है। लेकिन इन मंत्रों को साथ में रखो। क्योंकि मन जो है, वह हमेशा शांत रहना चाहिए। इन लोगों ने ये सभी मंत्र बाँट लिए थे। मैं इन सभी को साथ मिलाकर ऐसी प्रतिष्ठा करूँगा ताकि लोग धीरे-धीरे ये सारे मतभेद भूल जाएँ। यह इच्छा है हमारी, अन्य कोई इच्छा नहीं है।

हिन्दुस्तान ऐसी स्थिति में नहीं रहना चाहिए। जैन इस स्थिति में नहीं रहने चाहिए। सीमंधर स्वामी का मंदिर, वह मूर्ति का मंदिर नहीं है! वह अमूर्त का मंदिर है!

आरती, सीमंधर स्वामी की

इस समय जो भगवान ब्रह्मांड में हाज़िर हूँ, उनकी आरती ये लोग करते हूँ, वह दादा भगवान थ्रू करते हूँ और मैं वह आरती उन तक पहुँचाता हूँ। मैं भी उनकी आरती करता हूँ। डेढ़ लाख साल से भगवान हाज़िर हूँ, उन्हें पहुँचाता हूँ।

आरती में सभी देवी-देवता हाज़िर रहते हूँ। ज्ञानीपुरुष की आरती सीमंधर स्वामी को ठेठ तक पहुँचती है। देवी-देवता क्या कहते हूँ कि जहाँ परमहंस की सभा हो, वहाँ हम हाज़िर रहते हूँ। अपनी यह आरती भले ही किसी भी मंदिर में गाओ तो भगवान को हाज़िर होना ही पड़ता है।

अनन्य भक्ति, वहाँ दिया जा सकता है

हमें मोक्ष में जाना है तो महाविदेह क्षेत्र में जा सकें उतना पुण्य चाहिए। यहाँ आप सीमंधर स्वामी के लिए जितना करोगे, आपका उतना सब आ गया। और इतना करो तो बहुत हो गया। उसमें ऐसा नहीं है कि यह कम है। आपने जो सोचा हो (दान देने के लिए) वैसा करो तो सबकुछ हो गया। फिर उससे ज़्यादा करने की ज़रूरत नहीं है। फिर अस्पताल बनाओ या और कुछ बनाओ। वह सब अलग रास्ते पर जाता है। वह भी पुण्य

है, लेकिन संसार में ही रखता है और यह पुण्यानुबंधी पुण्य, जो मोक्ष में जाने में हेल्प करता है!

यह अनंत जन्मों का घाटा पूरा करना है और एक ही जन्म में पूरा करना है। इसलिए पूरी तरह मेरे पीछे पड़ना चाहिए, लेकिन वह तो आपके बस की बात नहीं है। अत: उनके साथ तार जोड़ देता हूँ, क्योंकि वहाँ पर जाना है। यहाँ से सीधा मोक्ष होनेवाला नहीं है। अभी एक जन्म और बाकी रहेगा। उनके पास बैठना है, इसलिए संधान करा देता हूँ और ये भगवान पूरे वर्ल्ड का कल्याण करेंगे।

जो नाम लेगा, उसके दु:ख जाएँगे

प्रश्नकर्ता : आप सीमंधर स्वामी का मंदिर इसलिए बनवाते हूँ ताकि फिर सभी उस प्रकार से आगे बढ़ सकें?

दादाश्री : सीमंधर स्वामी का नाम लेंगे, तभी से परिवर्तन होने लगेगा।

प्रश्नकर्ता : सद्गुरु के बगैर तो नहीं पहुँच पाएँगे न?

दादाश्री : सद्गुरु तो मोक्ष में जाने का साधन होते हूँ। लेकिन इन लोगों के जो दु:ख हूँ, वे सभी चले जाएँगे। पुण्य के उदय में परिवर्तन होता रहेगा। इससे इन बेचारों को दु:ख नहीं रहेगा। ये सभी कितने दु:खों में फँसे हुए हूँ। प्रत्यक्ष सद्गुरु मिलें और आत्मज्ञान मिले तब मोक्ष होगा। वर्ना नहीं मिला तो पुण्य तो भोगेगा बेचारा। अच्छा कर्म तो बाँधेगा।

दर्शन का सही तरीका

भगवान के मंदिर में या जिनालय में जाकर, सही तरीके से दर्शन करने की इच्छा हो तो, मैं तुम्हें दर्शन करने का सही तरीका सिखलाऊँ। बोलो, है किसी की इच्छा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, है। सिखाइए दादाजी। कल से ही उसके अनुसार दर्शन करने जाएँगे।

दादाश्री : भगवान के मंदिर में जाकर कहना कि, ''हे वीतराग भगवान! आप मेरे भीतर ही बैठे हूँ, लेकिन मुझे इसकी पहचान नहीं हुई। इसलिए आपके दर्शन कर रहा हूँ। यह मुझे 'ज्ञानीपुरुष' दादा भगवान ने सिखाया है। इसलिए इस प्रकार आपके दर्शन कर रहा हूँ। तो मुझे मेरी खुद की पहचान हो, ऐसी आप कृपा करें।'' जहाँ जाओ वहाँ इस प्रकार से दर्शन करना। यह तो अलग अलग नाम दिए हूँ। 'रिलेटिवली' अलग-अलग हूँ, सभी भगवान 'रियली' एक ही हूँ।

बस, एक को ही

एक तीर्थंकर राजी हो जाए तो अपने लिए बहुत हो गया! एक घर में जाने की जगह हो तो भी बहुत हो गया न! सभी घरों में कहाँ फिरें? और एक को पहुँचा तो सभी को पहुँच गया और जो सभी को पहुँचाने गए, वे रह गए। अपने लिए एक ही अच्छे, सीमंधर स्वामी! सभी को पहुँच जाता है।

इसलिए सीमंधर स्वामी का ठीक से ध्यान लगाओ। 'प्रभु, सदा के लिए आपका अनन्य शरण दीजिए' ऐसा माँगो।

प्रतिकृति से यहीं पर प्राप्ति

प्रश्नकर्ता : दादाजी, सीमंधर स्वामी को ऐसा होता होगा न कि ये दादाजी मेरा काम कर रहे हूँ?

दादाश्री : ऐसा नहीं है, लेकिन तुम याद करो तो तुम्हें फल मिलता है। सिद्ध भगवंतों को याद करो तो फल नहीं मिलेगा। ये देहधारी हूँ। तुम एक जन्म बाद वहाँ जा सकते हो। वहाँ उनके शरीर को तुम हाथ से छू सकोगे।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादाजी, हमें चान्स मिलेगा न?

दादाश्री : सब मिलेगा। क्यों नहीं मिलेगा? सीमंधर स्वामी के नाम का ही तो तुम रटन करते हो। सीमंधर स्वामी को तुम नमस्कार करते हो। वहीं पर तो जाना है हमें,

इसलिए हम उनसे कहते हूँ कि 'साहिब! आप भले ही वहाँ बैठे, हमें नहीं दिखते, लेकिन यहाँ हम आपकी प्रतिकृति बनाकर आपके दर्शन करते रहते हूँ।' बारह फुट की मूर्ति रखकर हम उनके दर्शन करते हूँ, उन्हें याद करते हूँ, क्योंकि यह जीवित भगवान की प्रतिकृति है, तो अच्छा रहता है। जो गए उसके दस्तखत काम नहीं आते, उनकी प्रतिकृति बनाकर क्या लाभ? ये तो काम आते हूँ। ये तो अरिहंत भगवान!

प्रश्नकर्ता : ये सभी दादा भगवान का कीर्तन करते हूँ, तब आप भी कुछ बोलकर कीर्तन कर रहे थे, वह किसका?

दादाश्री : मैं भी बोल रहा था! मैं दादा भगवान को नमस्कार करता हूँ। दादा भगवान की तीन सौ साठ डिग्री हूँ। मेरी तीन सौ छप्पन डिग्री हूँ। मेरी चार डिग्री कम हूँ। इसलिए मैंने पहले बोलना शुरू किया ताकि ये सब बोलें। इनकी भी डिग्रीयाँ कम हूँ न!

प्रश्नकर्ता : आप जिन्हें 'दादा भगवान' कहते हूँ, वे और ये सीमंधर स्वामी, इनके बीच क्या संबंध है?

दादाश्री : ओहोहो! वे तो एक ही हूँ। लेकिन सीमंधर स्वामी दिखाने का कारण यह है कि अभी मैं देह के साथ हूँ, मुझे भी वहाँ जाने की ज़रूरत है। क्योंकि जब तक सीमंधर स्वामी के दर्शन नहीं होते, तब तक मुक्तनहीं होंगे। एक अवतार शेष रहेगा। मुक्ति तो जो मुक्तहो चुके हूँ, उनके दर्शन से मिलेगी। यों तो मुक्तमैं भी हुआ हूँ लेकिन वे संपूर्ण मुक्तहूँ। वे हमारी तरह लोगों से ऐसा नहीं कहते कि 'ऐसे आना और वैसे आना। मैं तुम्हें ज्ञान दूँगा' ऐसी खटपट नहीं करते।

'सीमंधर स्वामी के असीम जय जयकार हो' बोल सकते हूँ?

प्रश्नकर्ता : 'सीमंधर स्वामी को निश्चय से नमस्कार करता हूँ', ऐसा जो बोलते हूँ, तो निश्चय से ही बोलना है या व्यवहार से बोलना है?

दादाश्री : निश्चय से। और देह तो ऊँचा-नीचा हो, हमें देह के साथ लेना-देना नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् 'मैं सीमंधर स्वामी को निश्चय से नमस्कार करता हूँ', ऐसे जो बोलता हूँ, वह सही है न?

दादाश्री : सही है। व्यवहार से यानी देह से। और इस नमस्कार विधि में जो अन्य सब हूँ न, वह सब व्यवहार से हूँ। यहाँ यह एक ही नमस्कार निश्चय से है।

प्रश्नकर्ता : दादा भगवान का निश्चय से है?

दादाश्री : हाँ, बस। यानी वास्तव में यहीं पर आपको निश्चय से नमस्कार करने चाहिए और बाकी सभी भगवंतो को व्यवहार से नमस्कार करता हूँ। अब सीमंधर स्वामी के लिए निश्चय से बोलो तो हर्ज नहीं है, वह तो अच्छी बात है। वहाँ हम निश्चय लिखेंगे तो सभी जगह निश्चय लिखना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : हाँ, हाँ, ठीक है।

दादाश्री : सिर्फ 'दादा भगवान' को ही निश्चय से किया।

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान ना असीम जय जयकार हो', जैसे बुलवाते हूँ, उस प्रकार से 'सीमंधर स्वामी ना असीम जय जयकार हो' बोल सकते हूँ?

दादाश्री : खुशी से बोल सकते हूँ। लेकिन दादा भगवान के जय जयकार बोलते समय भीतर जो आनंद होता है, वैसा आनंद उसमें नहीं होगा। क्योंकि ये प्रत्यक्ष हूँ। वह प्रत्यक्ष आप देख नहीं सकते, लेकिन बोल सकते हूँ। सीमंधर स्वामी के लिए जो चाहो बोल सकते हो, क्योंकि

वे हमारे शिरोमान्य भगवान हूँ और रहेंगे। जब तक हम सब मुक्तनहीं हुए, तब तक शिरोमान्य रहेंगे। यह तो हमने अँगुलिनिर्देश किया है, कि ऐसा जिसे करना आ गया, तो उसका कल्याण हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : हाँ, अँगुलिनिर्देश है। सब ठीक है।

दादाश्री : यह सब अँगुलिनिर्देश है। अब तक किसी ने अँगुलिनिर्देश नहीं दिया था, क्या करें फिर! सभी बातें बताई होंगी लेकिन अँगुलिनिर्देश नहीं किया कि ऐसा करो!

प्रश्नकर्ता : यह तो मैंने उस दिन बुलवाया था न, तब एक भाई ने कहा कि ऐसा नहीं बोल सकते। निश्चय से नहीं बोल सकते, इसलिए मैंने पूछा।

दादाश्री : नहीं, ऐसा बोले हों तो हर्ज नहीं। इससे कुछ पाप लगे ऐसा नहीं। लेकिन यदि ज्ञानीपुरुष के कहे अनुसार बोले न, तो उसमें बहुत फर्क पड़ जाता है। बोल लिया हो, तो उसका जोखिम नहीं है। प्रतिक्रमण नहीं करना पड़ेगा। सीमंधर स्वामी का केवल नाम भी लेगा, तो उसे फायदा हो जाएगा।

जहाँ प्योरिटी, वहाँ तैयारी

हमारा ध्येय क्या है? मैं तो अपने खर्च से कपड़े पहनता हूँ। ये नीरूबहन भी अपने खर्च से कपड़े पहनतीं हूँ। एक पाई किसी से लेनी नहीं और जगत् कल्याण के लिए सभी तैयारी है। करीब पचास हज़ार समकितधारी मेरे पास हूँ और उनमें दो सौ ब्रह्मचारी हूँ। वे सभी जगत् कल्याण के लिए तैयार हो जाएँगे।

आज्ञा बनाए, महाविदेह के लायक !!

यह ज्ञान लेने के बाद आपका यह जन्म महाविदेह जाने के लिए लायक ही बन रहा है। मुझे कुछ करने की ज़रूरत नहीं। नैचुरल (प्राकृतिक) नियम ही है।

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में किस तरह जा सकते हूँ, पुण्य से?

दादाश्री : यह हमारी आज्ञा का पालन करें, उससे इस जन्म में पुण्य बंध ही रहा है, वह महाविदेह क्षेत्र में ले जाता है। आज्ञा पालन से धर्मध्यान होता है, वह सब फल देगा। जितनी हमारी आज्ञा पालते हूँ, उतना पुण्य बँधता है। उससे फिर, वहाँ पर तीर्थंकर के पास फल भोगने पड़ेंगे।

प्रश्नकर्ता : हम महात्माओं का कचरे जैसा आचार देखकर सीमंधर स्वामी हमें वहाँ रखेंगे?

दादाश्री : उस घड़ी ऐसे आचार नहीं रहेंगे। अभी आप जो मेरी आज्ञा का पालन करते हो, उसका फल उस वक्त सामने आएगा। और अभी जो कचरा माल है, वह मुझे पूछे बगैर भरा था, वह निकल रहा है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, सीमंधर स्वामी को याद करने से, सीमंधर स्वामी के पास जा सकें, ऐसा निश्चित हो सकता है ?

दादाश्री : जाना है, यह तो निश्चित ही है। उसमें नया कुछ नहीं, लेकिन लगातार याद करने से दूसरा कुछ नवीन अंदर घुसेगा नहीं। दादाजी याद रहते हों या तीर्थंकर याद रहते हों, तो माया नहीं घुसेगी! अब यहाँ माया नहीं आती।

ज़िम्मेदारी किसकी ली?

हमारा सीमंधर स्वामी के साथ संबंध है। हमने सभी महात्माओं के मोक्ष की ज़िम्मेदारी ली है। जो हमारी आज्ञा पालेंगे, उनकी ज़िम्मेदारी हम लेते हूँ।

यह ज्ञान पाने के बाद एकावतारी होकर, सीमंधर स्वामी के पास जाकर वहाँ से मोक्ष में चला जाता है। किसी के दो अवतार भी हों, लेकिन चार अवतार से अधिक नहीं होंगे, यदि हमारी आज्ञा पाले तो। यहीं पर मोक्ष हो जाए। 'यहाँ एक भी चिंता हो तो दावा दायर करना' ऐसा कहते हूँ। यह तो वीतराग विज्ञान है। चौबीस तीर्थंकरों का सम्मिलित विज्ञान है।

सिर्फ सीमंधर स्वामी ही हमारे ऊपरी

प्रश्नकर्ता : हमारे तो आप रखवाले हूँ, लेकिन आपके ऊपर कौन है? आपको तो नियम से ही चलना पड़ता है न, जो भी आए उसके साथ?

दादाश्री : बहुत ही नियमपूर्वक! और हमारे ऊपरी तो ये बैठे हूँ न, सिर्फ सीमंधर स्वामी, वे ही हूँ! वे ही ऊपरी हूँ हमारे। हम उनसे कुछ माँग नहीं करते। माँग नहीं हो सकती न! आप मुझ से माँग सकते हूँ!!

अहो! वह अद्भुत दर्शन !!

प्रश्नकर्ता : हम तो दादा का वीज़ा बताएँगे।

दादाश्री : वीज़ा दिखलाते ही अपने आप काम हो जाएगा। तीर्थंकर को देखते ही आपके आनंद की सीमा नहीं रहेगी, देखते ही आनंद! पूरा जगत् विस्मृत हो जाएगा! जगत् का कुछ खाना-पीना नहीं भाएगा। उस घड़ी पूरा हो जाएगा। निरालंब आत्मा प्राप्त होगा! फिर कोई अवलंबन नहीं रहेगा।

सम्यक दृष्टि, वही वीज़ा

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है, तीर्थंकर के दर्शन करे तो मनुष्य को केवलज्ञान हो जाए!

दादाश्री : तीर्थंकर के दर्शन तो बहुत लोगों ने किए थे। हम सभी ने किए थे लेकिन उस समय हमारी तैयारी नहीं थी। दृष्टि परिवर्तन नहीं हुआ था, मिथ्यादृष्टि थी। उस मिथ्यादृष्टि का, तीर्थंकर भी क्या करें? जिसकी सम्यक दृष्टि हो, उस पर तीर्थंकर की कृपा उतर जाती है।

प्रश्नकर्ता : यानी जिसकी तैयारी हो, उसको दर्शन होने से मोक्ष हो जाता है।

दादाश्री : इसलिए हमें यहाँ तैयार हो जाना है। कारण इतना ही है कि तैयार होकर, वीज़ा लेकर जाओ। और भले ही कहीं भी जाओगे तो वहाँ कोई न कोई तीर्थंकर मिल

जाएँगे।

सीमंधर स्वामी को ही पूजो

हिन्दुस्तान में यदि घर–घर सीमंधर स्वामी की फोटो हो तो काम बन जाए। क्योंकि वे जीवंत हूँ। अगर हमारी फोटो नहीं होगी तो भी चलेगा लेकिन उनकी रखना। भले ही लोग उन्हें पहचाने नहीं और वैसे ही दर्शन करेंगे, तो भी काम हो जाएगा। ये सीमंधर स्वामी के चित्रपट बहुत अच्छे निकाले हूँ और जगह जगह पहुँच जाएँगे, तब काम हो जाएगा। वैष्णव, जैन, अन्य सभी घरों में पहुँच जाएँगे। वे हाज़िर हूँ, नकद फल देते हूँ!

यह मंदिर इसलिए बने हूँ कि जगत् सीमंधर स्वामी को पहचान सके। सीमंधर स्वामी कौन हूँ, वह जान सके । घर–घर सीमंधर स्वामी के फोटो की पूजा होगी और आरतियाँ होंगी और जगह जगह सीमंधर स्वामी के मंदिर बनेंगे, तब दुनिया का नक्शा कुछ और ही होगा!!

मोक्ष स्वरूपी के सानिध्य में

और हम यहाँ पर दिखाई ज़रूर देते हूँ लेकिन सीमंधर स्वामी के सामने ही बैठे रहते हूँ और वहाँ पर आपको दर्शन करवाते हूँ। हमारी उनसे जान–पहचान है, सीमंधर स्वामी हमारे दादा के भी दादा हूँ! आखिर में देखा जाए तो हमें जो चाहिए, उसी की ज़रूरत है!

और सीमंधर स्वामी के पास बैठे रहो न, उस मूर्ति के पास बैठे रहो न, तो भी हेल्प होगी। मैं भी बैठा रहता हूँ, मुझे तो मोक्ष मिल गया है, तो भी मैं बैठा रहा हूँ, वर्ना मुझे उनसे क्या काम था? क्योंकि अभी वे मेरे ऊपरी हूँ। उनके दर्शन करें तब मोक्ष होगा वर्ना मोक्ष नहीं होगा। उनके दर्शन करें, किसके दर्शन ? मोक्ष स्वरूप के। देह सहित जिनका स्वरूप मोक्ष है।

– जय सच्चिदानंद

वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी से प्रार्थना

हे निरागी, निर्विकारी, सच्चिदानंद स्वरूप, सहजानंदी, अनंतज्ञानी, अनंतदर्शी, त्रैलोक्य प्रकाशक, प्रत्यक्ष–प्रकट ज्ञानीपुरुष श्री दादा भगवान की साक्षी में, आपको अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करके, आपकी अनन्य शरण स्वीकार करता हूँ। हे प्रभु! मुझे आपके चरणकमलों में स्थान देकर अनंतकाल की भयंकर भटकन का अंत लाने की कृपा कीजिए, कृपा कीजिए, कृपा कीजिए।

हे विश्ववंद्य ऐसे प्रकट परमात्म स्वरूप प्रभु! आपका स्वरूप ही मेरा स्वरूप है। परंतु अज्ञानता के कारण मुझे मेरा परमात्म स्वरूप समझ में नहीं आता। इसलिए आपके स्वरूप में ही मैं अपने स्वरूप का निरंतर दर्शन करूँ ऐसी मुझे परम शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए।

हे परमतारक देवाधिदेव, संसार रूपी नाटक के आरंभ काल से आज दिन के अद्यक्षण पर्यंत किसी भी देहधारी जीवात्मा के मन–वचन–काया के प्रति, जाने–अनजानेजो अनंत दोष किए हूँ, उस प्रत्येक दोष को देखकर, उनका प्रतिक्रमण करने की मुझे शक्ति दीजिए। इन सभी दोषों की मैं आपसे क्षमा–याचना करता हूँ। आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान करता हूँ। हे प्रभु ! मुझे क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए। और मुझसे फिर ऐसे दोष कभी भी न हो, ऐसादृढ़ निर्धार करता हूँ। इसके लिए मुझे जागृति दीजिए, परम शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए।

अपने प्रत्येक पावन पदचिन्हों पर तीर्थ की स्थापना करनेवाले हे तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी प्रभु! संसार के सभी जीवों के प्रति संपूर्ण अविराधक भाव और सभी समकिती जीवों के प्रति संपूर्ण आराधक भाव, मेरे हृदय में सदा संस्थापित रहे, संस्थापित रहे, संस्थापित रहे ! भूत, भविष्य और वर्तमान काल के सर्व क्षेत्रों के सर्व ज्ञानी भगवंतों को मेरा नमस्कार हो, नमस्कार हो, नमस्कार हो ! हे प्रभु ! आप मुझ पर ऐसी कृपा बरसाइए कि जिससे मुझे इस भरतक्षेत्र में आपके प्रतिनिधि समान किसी ज्ञानीपुरुष का, सत्पुरुष का सत् समागम हो और उनका कृपाधिकारी बनकर आपके चरणकमलों तक पहुँचने की पात्रता पाऊँ।

हे शासन देव–देवियों! हे पांचांगुलि यक्षिणीदेवी तथा हे चांद्रायण यक्षदेव! हे श्री पद्मावती देवी ! हमें श्री सीमंधर स्वामी के चरणकमलों में स्थान पाने के मार्ग में कोई विघ्न न आए, ऐसा अभूतपूर्व रक्षण प्रदान करने की कृपा कीजिए और केवलज्ञान स्वरूप में ही रहने की परम शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए!

श्री सीमंधर स्वामी की आरती

जय 'सीमंधर स्वामी, प्रभु तीर्थंकर वर्तमान

महाविदेह क्षेत्रे विचरता, (२) भरत ऋणानुबंध ......जय

'दादा भगवान' साक्षीए, पहोंचाडुं नमस्कार (२) ......(स्वामी) प्रत्यक्ष फल पामुं हुं, (२) माध्यम ज्ञान अवतार ......जय

पहेली आरती स्वामीनी, ú परमेष्टि पामे (२) ......(स्वामी) उदासीन वृत्ति वहे, (२) कारण मोक्ष सेवे ......जय

बीजी आरती स्वामीनी, पंच परमेष्टि पामे (२) ......(स्वामी) परमहंस पद पामी, (२) ज्ञान–अज्ञान लणे ......जय

त्रीजी आरती स्वामीनी, गणधर पद पामे (२) ......(स्वामी)

निराश्रित बंधन छूटे, (२) आश्रित ज्ञानी थये ......जय

चोथी आरती स्वामीनी, तीर्थंकर भावि (२) ....(स्वामी)

स्वामी सत्ता 'दादा' कने, (२) भरत कल्याण करे ......जय

पंचमी आरती स्वामीनी, केवल मोक्ष लहे (२) ......(स्वामी)

परम ज्योति भगवंत 'हुँ', (२) अयोगी सिद्धपदे ......जय

एक समय स्वामी खोले जे, माथुं ढाली नमशे (२).....(स्वामी) अनन्य शरणुं स्वीकारी, (२) मुक्ति पदने वरे ....जय

प्रात: विधि

l श्री सीमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ। (५)

l वात्सल्यमूर्ति 'दादा भगवान' को नमस्कार करता हूँ। (५)

l प्राप्त मन–वचन–काया से इस संसार के किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दु:ख न हो, न हो, न हो। (५)

l केवल शुद्धात्मानुभव के अलावा इस संसार की कोई भी विनाशी चीज़ मुझे नहीं चाहिए। (५)

l प्रकट ज्ञानी पुरुष दादा भगवान की आज्ञा में ही निरंतर रहने की परम शक्ति प्राप्त हो, प्राप्त हो, प्राप्त हो। (५)

l ज्ञानी पुरुष 'दादा भगवान' के वीतराग विज्ञान का यथार्थ रूप से, संपूर्ण–सर्वांग रूप से केवलज्ञान, केवलदर्शन और केवलचारित्र में परिणमन हो, परिणमन हो, परिणमन हो। (५)

नमस्कार विधि

l प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में विचरते तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (४०)

l प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में विचरते ú परमेष्ठी भगवंतों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)

। प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में विचरते पंच परमेष्ठी भगवंतों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)

। प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में विहरमान तीर्थंकर साहिबों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)

। वीतराग शासन देवी–देवताओं को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)

। निष्पक्षपाती शासन देवी–देवताओं को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)

। चौबीस तीर्थंकर भगवंतों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)

। श्री कृष्ण भगवान को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)

। भरत क्षेत्र में हाल विचरते सर्वज्ञ श्री दादा भगवान को निश्चय से अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)

। दादा भगवान के सर्व समकितधारी महात्माओं को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)

। सारे ब्रह्मांड के समस्त जीवों के रियल स्वरूप को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)

। रियल स्वरूप ही भगवत् स्वरूप है, इसलिए सारे विश्व को भगवत् स्वरूप से दर्शन करता हूँ। (५)

। रियल स्वरूप ही शुद्धात्म स्वरूप है, इसलिए सारे विश्व को शुद्धात्म स्वरूप से दर्शन करता हूँ। (५)

। रियल स्वरूप ही तत्त्व स्वरूप है, इसलिए सारे विश्व को तत्त्वज्ञान रूप से दर्शन करता हूँ। (५)

(वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी को परम पूज्य दादा भगवान के माध्यम द्वारा प्रत्यक्ष नमस्कार पहुँचते है। कोष्ठक में लिखी संख्यानुसार उतनी बार प्रतिदिन बोलें।)

शुद्धात्मा के प्रति प्रार्थना

हे अंतर्यामी परमात्मा! आप प्रत्येक जीवमात्र में बिराजमान हूँ, वैसे ही मुझ में भी बिराजमान हूँ। आपका स्वरूप ही मेरा स्वरूप है। मेरा स्वरूप शुद्धात्मा है।

हे शुद्धात्मा भगवान! मैं आपको अभेद भाव से अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

अज्ञानतावश मैंने जो जो क्क् दोष किए हूँ, उन सभी दोषों को आपके समक्ष ज़ाहिर करता हूँ। उनका हृदयपूर्वक बहुत पश्चाताप करता हूँ और आपसे क्षमा–याचना करता हूँ। हे प्रभु ! मुझे क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए और फिर से ऐसे दोष नहीं करुँ, ऐसी आप मुझे शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए।

हे शुद्धात्मा भगवान! आप ऐसी कृपा करें कि मुझे भेदभाव छूट जाएँ और अभेद स्वरूप प्राप्त हो। मैं आप में अभेद स्वरूप से तन्मयाकार रहूँ।

क्क् जो जो दोष हुए हों, वे मन में ज़ाहिर करें।

नौ कलमें

१. हे दादा भगवान ! मुझे, किसी भी देहधारी जीवात्मा का किंचित्मात्र भी अहम् न दुभे (ठेस न पहुँचे), न दुभाया जाए या दुभाने के प्रति अनुमोदना न की जाए, ऐसी परम शक्ति दीजिए।

मुझे, किसी देहधारी जीवात्मा का किंचित्मात्र भी अहम् न दुभे, ऐसी स्याद्वाद वाणी, स्याद्वाद वर्तन और स्याद्वाद मनन करने की परम शक्ति दीजिए।

२. हे दादा भगवान ! मुझे, किसी भी धर्म का किंचित्मात्र भी प्रमाण न दुभे, न दुभाया जाए या दुभाने के प्रति अनुमोदना न की जाए, ऐसी परम शक्ति दीजिए।

मुझे, किसी भी धर्म का किंचित्मात्र भी प्रमाण न दुभाया जाए ऐसी स्याद्वाद वाणी, स्याद्वाद वर्तन और स्याद्वाद मनन करने की परम शक्ति दीजिए।

३. हे दादा भगवान ! मुझे, किसी भी देहधारी उपदेशक साधु, साध्वी या आचार्य का अवर्णवाद, अपराध, अविनय न करने की परम शक्ति दीजिए।

४. हे दादा भगवान ! मुझे, किसी भी देहधारी जीवात्मा के प्रति किंचित्मात्र भी अभाव, तिरस्कार कभी भी न किया जाए, न करवाया जाए या कर्ता के प्रति अनुमोदना न की जाए, ऐसी परम शक्ति दीजिए।

५. हे दादा भगवान ! मुझे, किसी भी देहधारी जीवात्मा के साथ कभी भी कठोर भाषा, तंतीली भाषा न बोली जाए, न बुलवाई जाए या बोलने के प्रति अनुमोदना न की जाए, ऐसी परम शक्ति दीजिए।

कोई कठोर भाषा, तंतीली भाषा बोले तो मुझे, मृदु-ऋजु भाषा बोलने की शक्ति दीजिए।

६. हे दादा भगवान ! मुझे, किसी भी देहधारी जीवात्मा के प्रति स्त्री, पुरुष या नपुंसक, कोई भी लिंगधारी हो, तो उसके संबंध में किंचित्मात्र भी विषय-विकार संबंधी दोष, इच्छाएँ, चेष्टाएँ या विचार संबंधी दोष न किए जाएँ, न करवाए जाएँ या कर्ता के प्रति अनुमोदना न की जाए, ऐसी परम शक्ति दीजिए।

मुझे, निरंतर निर्विकार रहने की परम शक्ति दीजिए।

७. हे दादा भगवान ! मुझे, किसी भी रस में लुब्धता न हो ऐसी शक्ति दीजिए।

समरसी आहार लेने की परम शक्ति दीजिए।

८. हे दादा भगवान ! मुझे, किसी भी देहधारी जीवात्मा का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष, जीवित अथवा मृत, किसी का किंचित्मात्र भी अवर्णवाद, अपराध, अविनय न किया जाए, न करवाया जाए या कर्ता के प्रति अनुमोदना न की जाएँ, ऐसी परम शक्ति दीजिए।

९. हे दादा भगवान ! मुझे, जगत कल्याण करने का निमित्त बनने की परम शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए।

(इतना आप दादा भगवान से माँगते रहें। यह प्रतिदिन यंत्रवत् पढ़ने की चीज़ नहीं है, हृदय में रखने की चीज़ है। यह प्रतिदिन उपयोगपूर्वक भावना करने की चीज़ है। इतने पाठ में तमाम शास्त्रों का सार आ जाता है।)

घर घर में सीमंधर स्वामी की पूजा और आरती होगी और जगह जगह सीमंधर स्वामी के मंदिर निर्माण होंगे, तब दुनिया का नक्शा कुछ और ही होगा ।
- पूज्य श्री दादा भगवान
ISBN 978-81-89725-97-6
9 788189 725976
Printed in India